स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय देवेश्वर दोलोई जी की जन्म शताब्दी के समापन समारोह पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी का संदेश

दिनांक 5 नवंबर 2023, रविवार	**समय : 6.00 PM**	**स्थान : जोरहाट**

- महान स्वतंत्रता सेनानी देवेश्वर दोलोई जी की जन्म शताब्दी के समापन समारोह के अध्यक्ष डॉ रातुल चंद्र बोरा जी,
- दोलोई जी की धर्मपत्नी श्रीमती भवानी दोलोई जी,
- सांसद श्री कामाख्या प्रसाद तासा जी, श्री तपन कुमार गोगोई जी,
- विधायक श्री हितेंद्र नाथ गोस्वामी जी,
- फोरेंसिक साइंस लेबोरेट्री के पूर्व निदेशक डॉ पद्म पाणि जी,
- जोरहाट कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ देवव्रत शर्मा जी, आमंत्रित अतिथि गण और
- उपस्थित देवियों एवं सज्जनों !

नमस्कार

असम के महान स्वतंत्रता सेनानी देवेश्वर दोलोई जी के जन्म के आज सौ साल पूरे हो चुके। बीते साल भर से दोलोई जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अनेक कार्यक्रम हो रहे थे। आज का यह कार्यक्रम, उनके जन्म शताब्दी वर्ष का समापन समारोह है। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में मुझे उपस्थित रहने की बड़ी इच्छा थी, परंतु कुछ प्रशासनिक अनिवार्यता की वजह से मैं आप सबके बीच उपस्थित नहीं हो पाया। यद्यपि मन से मैं आप लोगों के साथ ही हूँ।

मित्रों,

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अत्यंत प्रेरणादायक है। इस राष्ट्रीय संग्राम में पूरब से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक, देश के हर प्रांत के लोग स्वेच्छा से कूद पड़े थे। इसमें भला, हमारा असम क्यों पीछे रहता? असम के वीर-वीरांगनाओं ने मां भारती की रक्षा के अभूतपूर्व योगदान दिया है। परिणामस्वरूप, 14 अगस्त, 1947 की रात 12 बजे, जब भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बना, उसके साथ-साथ पूरे असम में भी भारत का तिरंगा फहराने लगा।

स्व. देवेश्वर दोलोई जैसे असम के सपूतों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर देश की आजादी की जंग में सक्रिय हिस्सा लिया और आजादी मिलने के बाद भी देशहित के कार्यों में स्वयं को समर्पित किया। आज देवेश्वर दोलोई जी की जन्म शताब्दी के इस पवित्र मौके पर, मैं उन्हें शत्-शत् नमन और वंदन करता हूँ। उनका आदर्श जीवन एवं देशप्रेम, हमारी नई पीढ़ी के युवाओं को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा - यह मेरा पूरा विश्वास है।

मित्रों,

भारत को आजाद कराने के लिए किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा और क्या-क्या कुर्बानियां देश को देनी पड़ी, यह आज की युवा पीढ़ी को जानना बेहद जरूरी है। इसलिए मैं मानता हूँ कि कि देवेश्वर दोलोई के जीवन-संघर्ष को असम के युवाओं को जानना-समझना आवश्यक है।

मित्रों,

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम चरण में ही पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह की चिनगारी भड़क उठी थी। जो बाद में महात्मा गांधी द्वारा छेड़े गए असहयोग आन्दोलन के समय और भी तेज हो गई। इसमें आम लोगों की भी महत्वपूर्ण भागीदारी थी, किंतु अफसोस कि पूर्वोत्तर के इन वीर सेनानियों का जिक्र शेष भारत में कम ही होता है।

देश के स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हुए हमें जनजातीय समुदाय के उन स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षों को नहीं भूलना चाहिए, जिन्होंने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ाइयां लड़ीं।

मित्रों,

कहा जाता है कि आग में तपकर ही सोना कुंदन बनता है। बड़े परिणाम के लिए सोने की तरह तपकर मेहनत करनी पड़ती है, तब जा कर कुंदन के रूप में फल प्राप्त होता है। इसका जीता-जागता उदाहरण स्वर्गीय देवेश्वर दोलोई जी थे।

मेरा मानना है कि इसमें उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भवानी दोलोई जी का योगदान भी महत्वपूर्ण उल्लेखनीय है। इसलिए मैं आज श्रीमती भवानी दोलोई और उनके सभी परिवारजनों को बधाई देता हूँ। देवेश्वर दोलोई जी सदा हंसमुख, मृदुभाषी, सहिष्णु, धैर्यशील और कर्तव्यपरायण व्यक्ति थे। समाज और देश के लिए समर्पित इस महान व्यक्ति का स्वर्गलोक गमन, कोरोना महामारी के दौरान 3 जून, 2021 को 98 वर्ष की उम्र हुआ।

स्वतंत्रता सेनानी देवेश्वर दोलोई जी के जन्म शताब्दी वर्ष के समापन समारोह की सफलता की कामना करते हुए, मैं एक बार फिर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

जय हिंद !